1.

कुषाण वंश

कनिष्क प्रथम

डॉ० कोमल
(अतिथि प्राध्यापक)
S.N.S.R.K.S. College
SAHARSA.
इतिहास विभाग

Scanned with CamScanner

[illegible] महान विजेता था। सिंहासन पर बैठने के बाद उसने विजयों के [illegible] विद्वानों का [illegible] उत्तराधिकारी थे कनिष्क [illegible] कुषाण काल का भारत के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है। कनिष्क प्रथम द्वारा विजय प्राप्त करने का विवरण निम्न प्रकार है :-

कश्मीर विजय :- कनिष्क ने सर्वप्रथम कश्मीर को पराजित करके अपने सीमा में मिलाया। इसका उल्लेख कल्हण की राजतरंगिणी से प्राप्त होता है। उसने कश्मीर में ही बौद्ध महासभा का आयोजन किया था तथा वहां पर अनेक बौद्ध विहार तथा मठ स्थापित किये।

साकेत तथा मगध :- चीनी तथा तिब्बती इतिहासकारों के अनुसार कनिष्क ने साकेत तथा मगध पर भी आक्रमण किया था। मगध पर आक्रमण करते स

इसकी भेंट बौद्धाचार्य अश्वघोष से पाटलि पुत्र में हुई थी। वह अश्वघोष से इतना अधिक प्रभावित हुआ था कि वह उसे अपने साथ अपनी राजधानी पेशावर ले गया था। कनिष्क प्रथम ने अश्वघोष के प्रभाव में आकर ही बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। कनिष्क के कुछ सिक्के बंगाल में भी प्राप्त हुये। जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि बंगाल तक क्षेत्र पर कनिष्क का कब्जा होगा। परंतु यह भी संभव हो सकता है कि बंगाल से उसका व्यापारिक संबंध ही रहा हो।

पार्थिया पर आक्रमण :- कनिष्क ने भारत के सीमाओं के बाहर भी विजय यात्रा की उसने पार्थिया के राज्य पर आक्रमण करके वहां के शासक को पराजित किया तथा पार्थिया राज्य को अपने साम्राज्य का एक अंग बना लिया।

चीन पर आक्रमण :-

कनिष्क का सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण चीन पर हुआ। उसने चीन के सम्राट होती के

Scanned with CamScanner

पास अपने राजदूत द्वारा यह सन्देश भेजा कि वह अपनी पुत्री का विवाह कनिष्क के साथ कर दे एवं उसकी अधीनता स्वीकार कर ले। इस संदेश से क्रोधित होकर होस्ती ने उसके दूत को बन्दी बना लिया। अतः कनिष्क ने चीन पर आक्रमण कर दिया। परंतु वह पराजित होकर वापस चला गया।

कनिष्क अपनी पराजय के अपमान को भूला नहीं था। उसने कुछ समय उपरांत होस्ती की मृत्यु हो जाने पर चीन पर आक्रमण किया। कनिष्क ने चीनियों को पराजित करके काशगर, खोतून तथा यारकन्द पर अधिकार कर लिया। अतः कनिष्क ने चीन पर आक्रमण कर दिया। वह दो चीनी राजकुमारों को बन्दी बनाकर अपने साथ लाया था।

॥ स्मिथ के अनुसार ॥

कनिष्क की सर्वाधिक आकर्षक सैनिक सफलता यारकन्द, काशगर तथा खैतून विजय थी।

Scanned with CamScanner

कनिष्क का विशाल साम्राज्य भारत तथा उसके बाहर तक फैला हुआ था। प्राप्त सिक्कों तथा अभिलेखों से ज्ञात होता है कि भारत में मथुरा, पंजाब, सिन्धु, उत्तर प्रदेश, कश्मीर, कौशाम्बी, श्रावस्ती तथा सारनाथ तक के प्रदेश उसके राज्य में सम्मिलित थे और भारत के बाहर अफगानिस्तान बैक्ट्रिया, काशगर, यारकन्द, खोतून आदि प्रदेश उसके साम्राज्य की राजधानी पुरुषपुर थी। पुरुषपुर अथवा पेशावर में आज भी कनिष्ककालीन भग्नावशेष प्राप्त होते हैं।

निष्कर्षतः :-

कनिष्क प्रथम एक महान सम्राट है। उसने ना केवल कुषाण वंश के इतिहास में बल्कि पुरे भारत के इतिहास में अपना नाम उल्लेखित कर दिये। कुषाण वंश का सबसे शक्तिशाली राजा कनिष्क प्रथम था जो भारत के इतिहास में अमिट छाप छोड़ता है।

Scanned with CamScanner